पोकरण . रामदेवरा . नोख . नाचना

जैसलमेर

jaisalmer

राजस्थान पत्रिका . जोधपुर . शनिवार. 26 नवम्बर 2011

तापमान	आज	पिछला	अंतर
अधिकतम	29.4	30.3	▼0.9
न्यूनतम	14.4	16.0	▼1.6

मुंबई। पूजा भट्ट को 'जिस्म 2' लिए खासी मशक्कत करनी पड़ रही है। 'जिस्म' में अभिन
गया, क्योंकि दोनों ही एक-दूसरे की उपस्थिति में इसमें काम नहीं करना चाहते हैं। इस फि
करोड़ रुपए मांगे। अब पूजा के पास कोई चारा नहीं है। सुना है नए लीः

जैसलमेर के सम मार्ग स्थित एक होटल में चल रही संगोष्ठी में उपस्थित अतिथि एवं संभागी। पत्रिका

'हाशिये पर खड़े लोगों को संबल देता है लोकतंत्र'

लोकधुनी > जैसलमेर में संस्कृति व जनतंत्र विषयक दो दिवसीय संगोष्ठी शुरू

जैसलमेर

bureau@patrika.com

दलित संसाधन केंद्र, गोविन्द वल्लभ पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान की ओर से जैसलमेर में शुक्रवार को दोदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी 'लोकधुनी' शुरू हुई। इस अवसर पर संस्कृति और जनतंत्र विषय पर प्रख्यात साहित्यकार नंदकिशोर आचार्य ने कहा कि संस्कृति व लोकतंत्र सांस्कृतिक विकास और मूल्य चेतना का राजनीतिक प्रतिफलन है। लोकतंत्र इस बात का अवसर प्रदान करती है ताकि हाशिए पर लाए गए लोग सत्ता और समाज में अपनी मजबूती दर्शा सकें।

विरोध में उठते सवाल

संगोष्ठी में मुंबई से आए प्रो. प्रहलाद जोगदानंद ने 'विरोध की संस्कृति दलितों के संदर्भ में' विषय पर कहा कि समाज की मुख्यधारा के लोगों ने दलितों को अन्य का दर्जा देकर सदैव बहिष्कृत रखा है। अपनी बात सिद्ध करने के लिए वे तरह-तरह के सवाल खड़े करते हैं। गौर से चिंतन किया जाए तो सवाल सिर्फ मुख्यधारा का विरोध ही दिखता है और कुछ नहीं।

गांवों में बसती है संस्कृति

अध्यक्षता करते हुए जयपुर से आए वरिष्ठ साहित्यकार हेतु भारद्वाज ने कहा कि संस्कृति चर्चा का विषय नहीं बल्कि जीने की एक कला है। उन्होंने कहा कि लोकतंत्र सही मायने में कहीं है तो संस्कृति में है, वह भी गांवों में ही। राजस्थान के दौसा गांव का उदाहरण देते हुए उन्होंने स्पष्ट किया कि वहां के लोगों ने इस अनूठी संस्कृति को जिंदा बनाए रखा है और अपनी जिंदगी में जिंदगी को मिला कर चलते हैं।

आधुनिकता की दासता

शुरुआत में जीबी पंत संस्थान के निदेशक प्रो. प्रदीप भार्गव ने कहा कि आधुनिकता की दासता हमें सदा अपनी धारा में ले जाती है, प्रश्न है कि ऐसी परिस्थिति में भी मॉर्डनाइज्ड सभ्यता कैसे समाहित हो रही है। संगोष्ठी का संचालन करते हुए प्रो. बद्रीनारायण ने विषय वस्तु रखते हुए कहा कि लोकतंत्र कोई राजनीतिक व्यवस्था नहीं जीवन दृष्टि है। इस अर्थ में लोकतंत्र सांस्कृतिक प्रक्रिया प्राप्त करने का प्रतिफल है।

इन्होंने की शिरकत

संगोष्ठी में भारतीय प्रशासनिक सेवा के पूर्व अधिकारी राजू शर्मा, आयकर आयुक्त अनिल मिश्र, रतन कुमार सारभरिया, आईदानसिंह भाटी, सीएसडीएस फेलो शैल मायाराम, दूरदर्शन दिल्ली के निदेशक कृष्ण कल्पित व अखिलेख संवादक तदभव ने भी विचार व्यक्त किए। *(कासं)*

राजस्थान पत्रिका दि० 26.11.2011
जैसलमेर